

व्यवस्था परिवर्तन की क्रांति



आप सभी जानते भी हैं और मानते भी होंगे कि इस दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है। अनगिनत घटनाएँ विश्व पटल पर घटीं जिनकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। राजनैतिक सन्दर्भ में यदि देखें तो हम पाएँगे कि विश्व के कई देश भयंकर गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुए। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4SEhZVTVhQWJlb2M/edit?usp=sharing

जापान नाम के देश से सभी परिचित होंगे। अधिकतर लोग परमाणु हमले की वजह से जापान को अधिक जानते हैं। इस सदी में जापान आत्मविश्वास के प्रतीक के रूप में उभरा है। सोलहवीं शताब्दी के अंत तक जापान एक स्वावलंबी राष्ट्र था। इसी शताब्दी के अंत में जापान के राजा से एक छोटी सी गलती हो गई जिसका खामियाजा जापान की पीढ़ी को लगभग 250 वर्षों तक भुगतना पड़ा! गलती यह हुई कि जापान के राजा ने एक होलैंड की कंपनी को जापान में व्यापार करने की अनुमति दे दी। इस कंपनी ने धीरे-धीरे जापान के बाज़ार पर कब्ज़ा कर लिया। इसी कंपनी की देखा देखी डच, ब्रिटिश और अमरीकी कंपनियाँ भी जापान में आ गईं और 1858 तक स्थिति यह थी कि जापान एक साथ चार देशों का गुलाम हो गया! इन्हीं दिनों जापान में एक नेता उभरा जिसका नाम था मेजी। यह व्यक्ति जापान के गाँव-गाँव जाकर लोगों को जागरूक करने का काम करता था। उसने एक ही संकल्प दिया लोगों को कि सभी व्यक्ति एकजुट हो कर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें। जब लोगों का दबाव बढ़ गया तो विदेशी ताकतों ने सैन्य सहायता से जापानी लोगों को कुचलने की चेष्टा की। जापानी लोग शारीरिक शक्ति में इस सेना के आगे कुछ भी नहीं थे परंतु मानसिक धरातल पर वे परमशक्तिशाली थे क्योंकि किसी भी कीमत पर उन्हें अपने देश को स्वतंत्र कराना था! संघर्ष चला, जापानी लोगों के संकल्प की विजय हुई और अंततः विदेशी कंपनियों को जापान से भागना पड़ा।

250 वर्षों की गुलामी के बाद जापान आर्थिक रूप से पूरी तरह टूट चुका था। उसके पास पूँजी नहीं थी जिससे कि वह अपने देश में उद्योग स्थापित कर

सके। जापानी लोगों को विदेशी सहायता से सख्त ऐतराज था क्योंकि इससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती थी। उन्होंने तय किया कि वे अतिरिक्त श्रम का सहारा लेंगे। अर्थशास्त्र का एक सिद्धांत है कि यदि आपके पास अतिरिक्त श्रम है तो आप अतिरिक्त पूँजी पैदा कर सकते हैं। इसी सिद्धांत का पालन करते हुए जापान के मजदूरों ने तय किया कि वे छह की जगह बारह घंटे काम करेंगे उतने ही वेतन पर! जापान के इंजिनियर जर्मनी जाकर तकनीक सीखते थे और सीखी हुई विद्या को जापान में लाकर उपयोग करते थे। उनकी महनत रंग लायी और इस तरह जापान का सबसे पहला कॉर्पोरेट संगठन तैयार हुआ जिसका नाम था मित्सुबिशी। समय के साथ-साथ मित्सुबिशी को सफलता हासिल हुई और उसी के अंतर्गत कई और छोटी कंपनियाँ तैयार हो गईं जैसे याशिका आदि।

जापान सदियों से भारत का शिष्य देश रहा है। उसकी संस्कृति में आज भी भारतीयता की छाप कई जगहों पर देखने को मिलती है जिसे जापानी लोग सहर्ष स्वीकार भी करते हैं। आज़ादी के बाद उन्होंने सबसे पहला काम जो किया वो था हर तरीके की विदेशी मानसिकता का बहिष्कार! उन्होंने अपनी भाषा में ही प्रत्येक कार्य को करने का फैसला लिया। उनकी संस्कृति में जमीन पर बैठना बहुत पवित्र माना जाता है। आप किसी कंपनी के मालिक के घर चले जाएँ या फिर एक साधारण से मजदूर के घर, आपका सत्कार जमीन पर बैठकर ही किया जाएगा! जापान केवल आर्थिक और सामाजिक तौर पर ही नहीं बल्कि मानसिक तौर पर भी स्वतंत्र हुआ।

दूसरी कहानी है अमरीका की। अमरीका सर्वप्रथम गुलाम रहा स्पैनिश लोगों का। 1776 तक अमरीका नाम की कोई चीज़ इस दुनिया में नहीं थी। अमरीकी मूल

निवासियों को रेड इंडियन कहा जाता था। उनका रंग ताम्बे जैसा होता था और नैन नक्श बिलकुल भारतीयों जैसे थे। उनकी सभ्यता को माया कहा जाता था। कोलंबस ने 15वीं शताब्दी में अमरीका को देखा। वहाँ की बेशुमार संपत्ति को देख कर उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं और उसने अंधाधुंध लूटमार शुरू कर दी! उसके बाद अंग्रेज़ों ने अमरीका को लूटा और वैसे ही गुलाम बनाया जैसे भारत को बनाया था। अमरीकी इतिहासकार मानते हैं कि इस गुलामी के दौर में ग्यारह करोड़ रेड इंडियन लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया! 18वीं शताब्दी में जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में अमरीका ने पहली बार गुलामी के विरुद्ध आगाज़ किया। उसी के चलते अमरीका आज़ाद हुआ और एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में उभरा। अमरीका की आज़ादी के पीछे मूल भावना जो थी, वह थी स्वदेशी से स्वावलंबन की।

अमरीका की आज़ादी की लड़ाई में सबसे अधिक सहायता फ़्रांस ने की थी जिसमें उसका बहुत धन व्यय हो गया था। दुर्भाग्यवश 18वीं शताब्दी में फ़्रांस में जबरदस्त बर्फ़बारी हुई जिससे वहाँ की फसल बर्बाद हो गई। तत्कालीन फ़्रांस के राजा, लुई सोलहवां, ने अर्थव्यवस्था को बल देने के लिए उद्योगों पर अतिरिक्त कर लगा दिए जिससे सीधा दबाव वहाँ की जनता पर पड़ा। इसके कारण फ़्रांस में गरीबी और बेरोज़गारी बढ़ गई तथा प्रजा में असंतोष फैल गया। यह आन्दोलन जब बहुत बढ़ गया तो भगवान माना जाने वाला लुई सोलहवां 1788 में गिरफ्तार कर लिया गया और वहाँ की जनता ने उसका वध कर दिया। इसके बाद वहाँ जगह ली प्रजातंत्र ने। 1788 से पहले फ़्रांस में आम व्यक्ति के लिए शिक्षा और चिकित्सा की कोई व्यवस्था नहीं थी। आज़ादी के बाद चिकित्सा और शिक्षा को सभी के लिए समान कर दिया गया। आज के दौर में जितना धन चिकित्सा और शिक्षा के लिए फ़्रांस की सरकार खर्च करती है, उतनी शायद ही दुनिया की कोई और सरकार करती हो। अब हाल यह है कि

अगर किसी सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार का कोई भी आरोप तय हो जाता है तो वह तुरंत बदल दी जाती है। वहाँ के राजनेताओं का मानना है कि अब 1788 वाली स्थिति नहीं आनी चाहिए, इसीलिए वे जनता से डरकर रहते हैं।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद रूस की माली हालत बहुत कमज़ोर हो चुकी थी। वहाँ के राजा निकोलस ज़ार ने रूसी मुद्रा रुबल को अंधाधुंध छापना शुरू कर दिया। इसके कारण वहाँ मुद्रा स्फीति बढ़ गई और गरीबी छा गई। निकोलस ज़ार ने रूस को इस आर्थिक मंदी से निकालने की बहुत कोशिश की परंतु वह नाकामयाब रहा। यह वो समय था जब रूस में भ्रष्टाचार अपने चरम पर था। दुर्भाग्यवश उन दिनों अधिक बर्फ़बारी के कारण रूस की कृषि भी चौपट हो गई थी। एक तो विश्व युद्ध में हार, फिर भ्रष्टाचार, उसके बाद गरीबी और अभाव के कारण वहाँ लोगों में असंतोष बड़े पैमाने पर फैल गया। इसी रोष के चलते 1917 में ज़ार का तख्ता पलट दिया गया और सरकार बनी कम्युनिस्टों की। इस सरकार ने रूस को विश्व पटल पर एक शक्तिशाली देश के रूप में स्थापित किया परंतु नौकरशाही बढ़ जाने के कारण फिर से भ्रष्टाचार अपने चरम पर पहुँच गया। 1996 में 1917 से भी बड़ा आन्दोलन हुआ रूस में लेकिन इस बार रूस छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया।

भारत सदियों से अफीम की खेती करता रहा है। अफीम आयुर्वेद में उपयोग होने वाली एक औषधि होती है जो बेहोशी के लिए उपयोग की जाती है। अंग्रेज़ भारत से अफीम ले जाकर चीन में बेचते थे और वहाँ से चाय खरीद कर भारत में लाकर बेचते थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक इतनी बुरी हालत थी कि चीन का एक एक नौजवान अफीम की चपेट में था। चीन के कुछ राष्ट्रवादी लोगों में इसकी जागरूकता आई तो उन्होंने जनमत तैयार किया जिसके फलस्वरूप चीन

में एक युद्ध हुआ जो इतिहास में 'अफीम युद्ध' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद चीन में कुछ अंग्रेज़ भक्त लोगों का शासन आया जिसका पुनः विरोध हुआ और चीन एक बार फिर आज़ाद हुआ सन 1949 में। इसके बाद चीन ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज विश्व में सबसे अधिक निर्यात करने वाला देश है चीन। उन्होंने विदेशी मॉडल को पूरी तरह से बदल कर रख दिया। जो काम अंग्रेज़ों ने किया था, चीनी लोगों ने ठीक उसके उल्टा काम शुरू कर दिया। अंग्रेज़ बड़े उद्योग लगाते थे, चीनी लोग छोटे-छोटे उद्योगों को जोड़कर बड़ा उद्योग चलाते थे जिससे सभी को रोज़गार मिल सके। आज पूरे एशिया में सबसे शक्तिशाली अर्थव्यवस्था अगर किसी की है तो वो चीन की है।

अगर ये देश अपने ऊपर भरोसा करके गुलामी की जंजीरों से आज़ाद हो सकते हैं तो हम क्यों नहीं? किस चीज़ में हम कम हैं? हमारे पास इतिहास है, संस्कार हैं, विश्व में सबसे अधिक युवा हैं, ऊर्जा है, विश्वास है, तो फिर किस बात का इंतज़ार कर रहे हैं हम लोग? मित्रों, 2014 हमारे देश के लिए एक क्रांति वर्ष सिद्ध होने जा रहा है। भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। वर्तमान सरकार लोकतंत्र का लगातार अपमान करती जा रही है। चारों तरफ असंतोष का माहौल है। 84 करोड़ लोगों के पास इज्जत की दो रोटी खाने की स्थिति नहीं है। भ्रष्टाचार की कमाई से शैतान पोषित हो रहे हैं! 6000 विदेशी कंपनियाँ दिन रात भारत को दरिद्र बना रही हैं। हमारा युवावर्ग राष्ट्र के प्रति समर्पित कम, नशे और व्यभिचार को ही संस्कृति समझ बैठा है। भारतीय संस्कृति को समूल नष्ट कर देने का दुस्साहस राजनेताओं में दिख रहा है। यही वो परिस्थितियाँ हैं दोस्तों जब राष्ट्र की शक्ति एक साथ उठ खड़ी होती है और एक नए शक्तिशाली राष्ट्र का उदय होता है! आओ मिलकर अपने देश को बचाएँ! अपनी भारत माता की बेड़ियाँ खोल उसे विश्व के शीर्ष पर प्रतिष्ठित करें! कौन है जो

हमारे सामने टिकने का साहस कर सके? अब बहुत हो चुका! अब तो चलते जाना है जब तक लक्ष्य हासिल नहीं हो जाता!!

जय भारत!